Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
April to June 2024, E-Journal, Vol. I, Issue XLVI, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

आधुनिक समाज में पुस्तकालयों एवं सूचना केन्द्रों की भूमिका: एक अध्ययन

डॉ. अजीत कुमार साहू* शशि प्रभा साहू**

* शासकीय नेहरू स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बुढार, जिला शहडोल (म.प्र.) भारत
** शासकीय नेहरू स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बुढार, जिला शहडोल (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – आधुनिक समाज की अनेक आवश्यकताएँ हैं– जैसे शिक्षा, अनुसंधान, सांस्कृतिक विकास, आध्यात्मिक एवं वैचारिक क्रियाकलाप, क्रीड़ा एवं मनोरंजन, आदि। इन आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए समाज ने अनेक संस्थाओं की स्थापना की। इनमें पुस्तकालय का स्थान अत्यन्त महत्वपूर्ण है। अन्य संस्थाएँ एक या दो प्रकार की आवश्यकताओं की पूर्ति करती हैं लेकिन पुस्तकालय सभी प्रकार की आवश्यकताओं की समान रूप से पूर्ति करता है समाज की शैक्षणिक एवं अनुसंधानपरक गतिविधियों के प्रोत्साहन, सांस्कृतिक उन्नयन, सूचना के प्रचार–प्रसार, आध्यात्मिक और सैद्धान्तिक आस्थाओं की पूर्ति, मानवीय मूल्यों की स्थापना और मनोरंजनात्मक कार्यों के आयोजन इत्यादि में पुस्तकालय की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है।

सभी कालों में समस्त मानवीय क्रियाकलापों के आयोजन एवं उनकी सपफलता में ज्ञान और सूचना पर्याप्त सहायक रहे हैं। लेकिन बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध की अवधि में सूचना और ज्ञान विकास के सशक्त साधन बन गए हैं और समस्त गतिविधियों के केन्द्र बन गए हैं। सूचना प्रौद्योगिकी के अनुप्रयोग के कारण सूचना का संग्रहण, प्रक्रियाकरण और व्यवस्थापन, अभिगम तथा सुलभता भौगोलिक दूरियों के बावजूद भी सरल हो गए हैं और इन कार्यों को तीव्रता एवं सटीकता के साथ संपन्न किया जा रहा है । आज सूचना तथा ज्ञान को मूल संसाध्न माना गया है और आधुनिक समाज को 'सूचना समाज' की संज्ञा दी गई है।

सूचना और ज्ञान की अनेक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए प्रयुक्त संस्थागत पद्धतियाँ एवं व्यवस्थाएँ पूर्ण रूप से परिवर्तित हो गई हैं। ज्ञान और सूचना की आवश्यकता की पूर्ति करने वाली अनेक संस्थाओं में पुस्तकालयों का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है ।

प्रस्तावना – आधुनिक समाज में मानव की समस्त गतिविधियों का आयोजन संस्थाओं के माध्यम से संपन्न किया जाता है। आज समस्त प्रमुख सामाजिक कार्यों एवं संगठनों का संस्थाकरण किया जा चुका है–चाहे वह आर्थिक कार्यक्रम हो या स्वास्थ्य–सेवाएं चाहे शिक्षा हो या अनुसंधान, चाहे व्यवसाय हो या उद्योग। पर्यावरण की सुरक्षा अथवा प्रतिरक्षा की व्यवस्था को भी संस्थाओं एवं संगठनों के माध्यम से ही संपन्न किया जाता है। पुस्तकालय तथा अन्य ऐसी संस्थाएँ वे संस्थाएँ होती हैं जो प्रलेखों में अभिलेखबद्ध सूचना या ज्ञान का संग्रहण, भंडारण, प्रक्रियाकरण, व्यवस्थापन, वितरण तथा प्रसार करती हैं। चूँकि ज्ञान एवं सूचना मानव के सर्वांगीण विकास के लिए आवश्यक होते हैं, अत: पुस्तकालय एवं अन्य संस्थाएँ, जो सूचना तथा ज्ञान की व्यवस्था तथा निष्पादन करती हैं, महत्वपूर्ण होती हैं। इस इकाई के अंतर्गत ज्ञानार्जन की औपचारिक एवं अनौपचारिक शिक्षण प्रक्रियाओं, अनुसंधन एवं विकास, सांस्कृतिक क्रियाकलापों, आध्यात्मिक तथा विचारात्मक क्षेत्रों, मनोरंजन और उत्सव आदि में पुस्तकालयों के योगदान और प्रभावशीलता का परिचय दिया गया है। सूचना प्रौद्योगिकी के विकास के चमत्कारों और नित्यप्रति सूचना उपयोक्ताओं की श्रेणियों में वृद्धि के साथ ही साथ उनके विभिन्न उद्देश्यों की पूर्ति के लिए सूचना की माँग में वृद्धि के कारण, आधुनिक समाज सूचना समाज की ओर अग्रसर हो रहा है, जिसमें परिवर्तन की मुख्यधारा और परिवर्तन की दिशा में सूचना और ज्ञान सशक्त उपकरण का कार्य कर रहे हैं। इस इकाई में इन विचारधराओं का विस्तृत वर्णन किया गया है। पुस्तकालयों के योगदान के मूल्यांकन के लिए इन विचारधराओं को आत्मसात करना अति आवश्यक है। व्यावसायिक पद्धतियों, क्रियाकलापों और कार्यों की जानकारी के लिए इनसे प्रचुर सहायता तथा परिज्ञान प्राप्त होगा। इस इकाई के अनुच्छेदों में पुस्तकालयों के योगदान की विवेचना की गई है।

पुस्तकालय एवं शिक्षा

शिक्षा के उद्देश्य है– (1) ज्ञान और कौशल प्रदान करना (2) मूल्यों को जाग्रत करना। तथा (3) व्यावसायिक कौशल प्रदान करना।

शिक्षा औपचारिक एवं अनौपचारिक दोनों प्रकार की होती है। औपचारिक शिक्षा से अभिप्राय है– 'किसी विद्यालय, महाविद्यालय या विश्वविद्यालय में नियमित रूप से छात्रा के रूप में पंजीकृत होकर और प्रत्यक्ष रूप से शिक्षक–छात्र संपर्क के माध्यम से ज्ञानार्जन करना।' लेकिन अनौपचारिक शिक्षा पद्धति में शिक्षा किसी संस्था पर आधरित नहीं होती है बल्कि दूरस्थ शिक्षा पद्धति द्वारा प्रदत्त एवं चलाए जा रहे पाठ्यक्रमों के माध्यम से किसी अन्य ज्ञानार्जन विधि अथवा स्व–अध्ययन की सहायता से शिक्षा प्राप्त की जाती है।

औपचारिक शिक्षा–औपचारिक शिक्षा की प्रत्येक संस्था–चाहे वह विद्यालय, महाविद्यालय अथवा विश्वविद्यालय हो उनका अपना एक पुस्तकालय अवश्य होना चाहिए। जिन विषयों के पाठ्यक्रमों की शिक्षा प्रदान की जाती है उनसे संबंधित पुस्तकों का संकलन उसमें होना चाहिए। पुस्तकों

का अध्ययन करने और उनमें निहित ज्ञान को धारण करने के लिए छात्रों को प्रोत्साहित करना चाहिए। प्रारंभिक शिक्षा के स्तरों एवं अवस्थाओं में विद्यालयों को कक्षा के अध्ययन के पूरक के रूप में कार्य करना चाहिए। कालान्तर में, विशेषत: महाविद्यालयों तथा विश्वविद्यालयों में, ज्ञानार्जन की प्रमुख विधि अर्थात् कक्षा अध्ययन एवं ज्ञानार्जन की परम्परा को पुस्तकालयोन्मुख बना दिया जाना चाहिए। इस पद्धति में छात्रों को विषय का गहन ज्ञान संबंधित विषयों की अनेक पुस्तकों का विस्तृत एवं विधिवत अध्ययन करने से प्राप्त होगा। विभिन्न पुस्तकों में विभिन्न प्रकार के प्रतिपादित सिद्धान्तों एवं दृष्टिकोणों का विश्लेषण करने की क्षमता छात्रों में जाग्रत होने के पश्चात् उनमें विश्लेषणात्मक एवं आलोचनात्मक चिन्तन की योग्यता का विकास होगा। इससे उनमें अपने स्वतंत्र दृष्टिकोणों एवं अभिमतों और सिद्धान्तों को सूत्रबद्ध करने की योग्यता का भी विकास होगा। छात्रों के बौद्धिक विकास को प्रोत्साहित करने में पुस्तकालयों के योगदान पर संदेह नहीं किया जा सकता।

विद्यालयीन, महाविद्यालयीन एवं विश्वविद्यालयीन पुस्तकालयों के अतिरिक्त औपचारिक शिक्षा में सहायता करने का दायित्व सार्वजनिक पुस्तकालयों का भी होता है। इसके लिए सार्वजनिक पुस्तकालयों को संबंधित क्षेत्रों में शिक्षा संस्थाओं के छात्रों तथा शिक्षकों के लिए शैक्षणिक एवं विभिन्न पाठ्यक्रमों से संबंधित उपयुक्त पुस्तकों का संग्रह अवश्य करना चाहिए और उन्हें सुलभ कराना चाहिए। इस प्रसंग में यह धयान देने की बात है कि सार्वजनिक पुस्तकालय को समुदाय के सभी लोगों की सेवा करनी चाहिए और अधयापकों एवं छात्रों की आवश्यकता की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए।

अनौपचारिक शिक्षा – अनौपचारिक शिक्षा प्रक्रिया में शिक्षक की सहायता अल्पतम होती है। पुस्तकालयों की इसमें मुख्य भूमिका होती है। ऐसी स्थिति में छात्रों को ज्ञानार्जन प्राय: स्वाधयाय के माध्यम से करना पड़ता है। इस दिशा में औपचारिक शैक्षणिक संस्थाओं और सार्वजनिक पुस्तकालयों को अपना महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करना पड़ता है। शैक्षणिक संस्थाओं के पुस्तकालयों को अनौपचारिक शिक्षा पद्धति के अंतर्गत छात्रों को पुस्तकालय सुविधाएँ इस प्रकार से सुलभ करानी चाहिए जिससे उनके मूल एवं प्राथमिक उपयोगिताओं के हितों में व्यवधान न हों। इस संबंध में विश्वविद्यालय, जो एक निकाय के रूप में शैक्षणिक मानक एवं स्तरों को निर्धारित करते हैं और उच्च शिक्षा के क्षेत्रा में परीक्षाओं का आयोजन एवं संचालन करते हैं, का एक विशेष दायित्व होता है। उन्हें अपनी पुस्तकालय सेवाओं को अधिकाधिक व्यवहार एवं विस्तृत बनाने का प्रयास करना चाहिए जिससे उनके मूल उपयोगिताओं के साथ ही साथ अनौपचारिक शिक्षा के छात्र भी पुस्तकालय सेवाओं से लाभान्वित हो सकें। इस कार्य को संभव बनाने के लिए विश्वविद्यालय के कार्यक्षेत्र के अंतर्गत विश्वविद्यालय के केन्द्रीय पुस्तकालय की शाखाओं और केन्द्रों की स्थापना करनी चाहिए और शैक्षिक समुदाय के साथ-साथ अनौपचारिक शिक्षा के छात्रों को भी उन शाखाओं और केन्द्रों के उपयोग की अनुमति देनी चाहिए।

फिर भी, अनौपचारिक शिक्षा के लिए वांछित सुविधाएं उपलब्ध कराने का मुख्य दायित्व सार्वजनिक पुस्तकालयों का ही होता है। सार्वजनिक पुस्तकालयों की सुविधा का लाभ प्राप्त करना प्रत्येक नागरिक का अधिकार है। इस दायित्व को पूरा करने के लिए संबंधित क्षेत्र के अनौपचारिक शिक्षा के छात्रों की आवश्यकता के अनुरूप पुस्तकों एवं पत्रिकाओं का अधिग्रहण कर सुलभ करने का प्रयास करना चाहिए। अनौपचारिक शिक्षा पद्धति के कार्यक्रमों की सफलता के लिए सुदृढ सार्वजनिक पुस्तकालय व्यवस्था अति आवश्यक होती है। अनौपचारिक शिक्षा पद्धति के छात्रों की पुस्तकालय संबंधी आवश्यकता की पूर्ति यदि शैक्षणिक एवं सार्वजनिक पुस्तकालयों द्वारा नहीं की जाती है तो ये छात्र सीरीज और गाइड का ही उपयोग करने के लिए बाध्य हो जाएँगे जिसके परिणामस्वरूप शिक्षा के स्तर में गिरावट आती जाएगी।

निरक्षरों की शिक्षा – क्या हम इस बात को उचित मानते हैं कि निरक्षरों को शिक्षा का लाभ नहीं मिलना चाहिए? साक्षरता ही शिक्षा का एकमात्र माध्यम है, न कि स्वयं शिक्षा। इसमें कोई संदेह नहीं कि शिक्षा एक अत्यन्त महत्वपूर्ण साधन है और इससे वंचित होना सबसे बड़ी असुविधा है। इस कार्य के लिए आजकल अनेक ऐसे प्रभावशाली साधन सुलभ हैं जो आधुनिक प्रौद्योगिकी की देन हैं। श्रव्य-दृश्य के साधनों, विशेषकर वीडियो टेप के माध्यम से शिक्षा को प्रत्येक घर के दरवाजे तक लाना सर्वथा संभव हो गया है। इस साधनों के माध्यम से समुदाय के निरक्षर लोगों की शिक्षा के लिए कार्य करना सार्वजनिक पुस्तकालय का एक विशेष दायित्व है। निरक्षर व्यक्तियों को शिक्षित बनाने के लिए सार्वजनिक पुस्तकालयों द्वारा विद्यार्जन क्लब और मौखिक संप्रेषण कार्यक्रमों का भी आयोजन करना चाहिए।

भारत जैसे देश में जहाँ निरक्षरता 47.79 प्रतिशत (1991 जनगणना) है, इस संबंध में सार्वजनिक पुस्तकालयों की महत्वपूर्ण भूमिका से इंकार नहीं किया जा सकता। इस कार्य को पूरा करने के लिए सार्वजनिक पुस्तकालयों को स्वयं को तैयार करना होगा।

कामकाजी समूहों की शिक्षा – एक अन्य दृष्टिकोण से भी पुस्तकालय की शैक्षणिक भूमिका होती है। अपने कार्यक्षेत्र से संबंधित विभिन्न व्यवसायों में संलग्न लोगों एवं श्रमिकों की आवश्यकता के अनुसार उन्हें पुस्तकों का संग्रह करना चाहिए। ऐसी पुस्तकों को अध्ययन कर संबंधित कार्यक्षेत्र से वे अपने को शिक्षित रख सकते हैं और अपनी कार्य-कुशलता को बढा सकते हैं। इससे उत्पादकता में वृद्धि होती है। सार्वजनिक पुस्तकालयों को इस दिशा में अहम भूमिका अदा करनी चाहिए।

विकलांगों की शिक्षा – विकलांग लोगों के लिए शैक्षणिक संस्थाओं की स्थापना करना समाज और शासन का दायित्व है। ऐसी संस्थाओं द्वारा उपयुक्त अध्ययन-अध्यापन सामग्री का अधिग्रहण किया जाता है। अन्य भौतिक सुविधओं के अतिरिक्त नेत्राविहीनों की पुस्तकें एवं अन्य प्रकार की शिक्षण सामग्री को भी उपलब्ध किया जाना चाहिए। ऐसी संस्थाओं के पुस्तकालयों में उपयुक्त सामग्री का संग्रह करना आवश्यक होता है और विकलांग व्यक्तियों की उनके शिक्षार्जन में सहायता करना उनका दायित्व होता है।

अनुसंधान में पुस्तकालय का योगदान – अनुसंधान के क्रियाकलापों को समर्थन देना पुस्तकालयों का एक महत्वपूर्ण दायित्व है। अनुसंधन की सफलता एवं पूर्णता के लिए उपलब्ध ज्ञान एवं सूचना की प्राप्ति एवं जानकारी अति आवश्यक होती है। नवीनतम ज्ञान को मुख्यत: पत्रिकाओं, अनुसंधान प्रतिवेदनों तथा अन्य ऐसे प्रकाशनों के माध्यम से संप्रेषित तथा प्रसारित किया जाता है। अत: शोध की गतिविधियों एवं कार्यक्रमों को प्रोत्साहित करने के लिए सभी शोध संगठनों एवं संस्थाओं तथा औद्योगिक प्रतिष्ठानों और उपक्रमों के शोध एवं विकास हेतु विभागीय पुस्तकालयों का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण होता है। अनुसंधन की दृष्टि से कोई भी पुस्तकालय उपयोगी सिद्ध हो सकता है। मानविकी और सामाजिक विज्ञानों के क्षेत्रों से

संबंधित अनुसंधानपरक गतिविधियों में सार्वजनिक पुस्तकालयों की भूमिका भी अत्यंत महत्वपूर्ण है।

सांस्कृतिक गतिविधियों में पुस्तकालय का योगदान – पुस्तकालय का सांस्कृतिक योगदान यह होता है कि यह मानव जाति की सांस्कृतिक धरोहर एवं उपलब्धियों को सुरक्षित रखता है जो वस्तुत: पुस्तकों तथा अन्य प्रलेखों में निहित होती हैं। पुस्तकालय की सांस्कृतिक भूमिका दो अन्य दृष्टिकोणों से भी महत्वपूर्ण होती है। इसे उन पुस्तकों को सुलभ कराना चाहिए जो लोगों की सृजनात्मक प्रतिभा की अभिव्यक्ति में सहायक सिद्ध होती हैं और उनके सौन्दर्य बोध और मूल्यांकन की क्षमता को विकसित करती हैं। इसे सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन करना चाहिए–जैसे, संगीत समारोह, नृत्य, नाटक, चित्रकला, प्रतियोगिता, चित्रकला प्रदर्शनी, आदि और समुदाय के सांस्कृतिक जीवन को समृद्ध और सशक्त बनाते रहना चाहिए। वस्तुत: ऐसे कार्यक्रम मुख्यत: सार्वजनिक पुस्तकालयों के कार्यक्षेत्र में आते हैं। इनका आयोजन करना ऐसे पुस्तकालयों की उपादेयता को बढाता है।

सूचना प्रसार में पुस्तकालय का योगदान – पुस्तक संग्रह के माध्यम से पुस्तकालय ज्ञान एवं सूचना के विशाल भण्डार का निर्माण करते हैं। सामाजिक प्रगति को सुनिश्चित करने वाले किसी भी मानवीय क्रियाकलाप की सपफलता के लिए सूचना एक आवश्यक उपादान और संसाधन है। शोधार्थी, शिक्षक, छात्र, प्रशासक, औद्योगिक एवं व्यापारिक प्रबन्धक, शिल्पी, उद्यमी, कृषक, कारखानों एवं खेतों में काम करने वाले श्रमिक, आदि सभी को सूचना की आवश्यकता होती है जिससे वे अपने व्यवसाय में सफलता पाने के लिए अपने को अत्यधिक सक्षम बना सकें। पुस्तकालय का प्रमुख सूचनात्मक योगदान उपयुक्त विधियों से सूचनाप्रद सामग्री का संग्रह करना होता है। इसीलिए पुस्तकालय को सूचना केन्द्र की संज्ञा भी दी जाती है। पुस्तकालय की सूचनात्मक भूमिका इसलिए भी होती है कि लोगों की सामाजिक एवं आर्थिक आवश्यकता के लिए भी सूचना की आवश्यकता होती है जिसकी पूर्ति पुस्तकालय करता है। पुस्तकालय अपने पुस्तक–संग्रह में रोजगार चयन से सम्बन्धित पुस्तकें भी रख सकते हैं और इस प्रकार उन पाठकों की सहायता कर सकते हैं जो किसी विशेष क्षेत्र में रोजगार प्राप्त करने के इच्छुक हैं। किसी प्रकार के उद्यम को करने के लिए किस प्रकार की जानकारी चाहिए अथवा कोई रोजगार कैसे प्राप्त करें या कैसे प्रारम्भ करें, आदि की सूचनाप्रद सामग्री को भी पुस्तकालय सुलभ कराते हैं। अत: पुस्तकालय को इस प्रकार से सुसज्जित एवं व्यवस्थित किया जाना चाहिए कि यह समुदाय के सदस्यों की वर्तमान तथा संभावित मांग से संबंधित सूचना उपलब्ध करा सकें।

धार्मिक संस्थाओं में पुस्तकालय का योगदान – पुस्तकों को सामान्यत: तीन श्रेणियों में विभक्त किया जा सकता है। सूचनात्मक पुस्तकें, मनोरंजनात्मक पुस्तकें, तथा प्रेरणात्मक पुस्तकें। प्रेरणाप्रद पुस्तकों के अंतर्गत आने वाली पुस्तकें हैं: आध्यात्मिक और धर्मिक पुस्तकें, सैद्धान्तिक दृष्टिकोणों एवं विचारधाराओं का प्रतिपादन करने वाली पुस्तकें, तथा अन्य शाश्वत मूल्यों की पुस्तकें जिन्हें हम क्लासिक्स कहते हैं। इनसे अध्येताओं की आध्यात्मिक, धर्मिक तथा वैचारिक एवं नैतिक पिपासा शांत होती है। प्रत्येक पुस्तकालय में इस प्रकार की पुस्तकों का प्रतिनिधित्व करने वाले संकलन को अवश्य रखना चाहिए जिससे लोगों को उच्च आदर्शों हेतु प्रेरित किया जा सके और उनके मस्तिष्क में मूल्यों का संचार हो सके।

मनोरंजन में पुस्तकालय का योगदान – किसी भी समुदाय के सदस्यों द्वारा फुर्सत या अवकाश के समय का स्वस्थ सदुपयोग अत्यधिक महत्वपूर्ण है। ऐसा होने से समुदाय के सदस्यों को अवकाश के समय में नकारात्मक एवं विध्वंसकारी गतिविधियों में लिप्त होने से बचाया जा सकता है। पुस्तकालयों द्वारा उपयोक्ताओं की मनोरंजन परक आवश्यकताओं की तुष्टि भी की जानी चाहिए तथा इसके लिए उपयुक्त पुस्तकों की व्यवस्था की जानी चाहिए। उपन्यास, विभिन्न कलाओं से संबंधित कृतियाँ, भ्रमण–साहित्य, जीवनियाँ, लोकप्रिय पत्रिकाएँ, मनोरंजनपरक साहित्य की श्रेणी में आते हैं। प्रत्येक पुस्तकालय के प्रलेख–संग्रह में ऐसे साहित्य का प्रचुर संग्रह होना चाहिए। इसके अतिरिक्त पुस्तकालयों में, विशेषत: सार्वजनिक पुस्तकालयों में, स्वस्थ मनोरंजन एवं मनोविनोद के कार्यक्रमों का आयोजन किया जाना चाहिए–जैसे, संगीत समारोहों और निष्पादन कलाओं आदि का आयोजन। वस्तुत: हम निष्कर्ष रूप से कह सकते है कि इस अध्ययन में शिक्षा, अनुसंधान एवं विकास, सांस्कृति गतिविधियों एवं अन्य ऐसे क्षेत्रों में पुस्तकालयों के योगदान एवं प्रभावशीलता की झाँकी प्रस्तुत की गयी है। इसका अध्ययन करने के पश्चात् हम समाज में सूचना के विभिन्न उद्देश्यों की पूर्ति हेतु पुस्तकालयों की आवश्यकता एवं योगदान की व्याख्या कर सकेंगे। परिवर्तित समाज में पुस्तकालयों के विस्तारपरक आयामों तथा नये प्रकार की सूचना संस्थाओं के रूप में उनकी उभरती हुई छवि से अवगत हो सकेंगे तथा आज के सूचना समाज के विविध परिप्रेक्षयों में पाठकों की विविध सूचनापरक आवश्यकताओं को संतुष्ट करने के लिए पुस्तकालयों द्वारा चलाई जाने वाली सेवाओं से परिचित हो सकेंगे।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. Isaac, K.A. (1987). Libraries and Librarianship: A Basic Introduction. Madras: S Vishwanathan Printers and Publishers Pvt. Ltd. pp. 1-35.
2. Khanna, J.K (1987). Librarv and Society. Kurukhetra: Research Publications pp.7-79.
3. Mc Garry, K.J (1981). Changing Concept of Information: An Introductory Analysis. London: Clive Bingley. Chapter5.
4. Rath, P.K. and Rath. M.M (1992). Sociology of Librarianship. Delhi: Pratibha Prakashan.
5. महेन्द्रनाथ (1998)। पुस्तकालय और समाज। जयपुर: पोइन्टर पब्लिशर्स।
6. शर्मा, पाण्डेय एस. के. (1998)। पुस्तकालय और समाज। नई दिल्ली: ग्रन्थ अकादमी
7. सैनी, ओमप्रकाश (1999)। ग्रन्थालय एवं समाज। आगरा: वाई.के पब्लिशर्स।

****